

न्यायालय:- अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, अकलेरा, जिला-झालावाड़ (राज.)

पीठासीन अधिकारी - आशीष मीना, आर.जे.एस.
नि.फौ.प्रकरण संख्या - 191/2025

गोपालसिंह पुत्र जोरावरसिंह, निवासी-बिलवा, थाना असनावर असनावर जिला झालावाड़

परिवादी....

बनाम

जितेन्द्र कुमार पुत्र शम्भूलाल, निवासी अकतासा, थाना असनावर जिला झालावाड़

अभियुक्त....

अपराध अन्तर्गत धारा 138 परक्राम्य लिखत अधिनियम

उपस्थित:-

1. श्री भागचंद मीना, विद्वान अधिवक्ता परिवादी की ओर से।
2. श्री अर्जुनसिंह, विद्वान अधिवक्ता, अभियुक्त की ओर से।

निर्णय

दिनांक:-24-03-2026

1. परिवादी की ओर से जरिए अधिवक्ता यह परिवाद अभियुक्त के विरुद्ध अपराध अन्तर्गत धारा 138 एन.आई. एक्ट में प्रस्तुत किया गया।
2. संक्षेप में परिवाद पत्र के तथ्य इस प्रकार हैं कि फरियादी से मुल्जिम ने घरेलू व व्यवसायिक कार्यों में रूपयों की आवश्यकता हेतु 6,50,000/-रूपए उधार लिए थे, जिसके भुगतान 6,50,000/-रूपये की अदायगी हेतु राशि 6,50,000/- रूपए का एक चैक, चेक नंबर 875042 दिनांक 09-08-2024, खाता संख्या 61152285341, बैंक भारतीय स्टेट बैंक, शाखा असनावर का अपने हस्ताक्षर कर दिया। फरियादी ने उक्त चेक भुगतान प्राप्त करने हेतु बैंक, सेंट्रल बैंक ऑफ इण्डिया शाखा अकलेरा में उसके बचत खाते में जमा कराया, जो बैंक द्वारा बिना भुगतान के रिफण्ड मैमो दिनांक 29-10-2024 को मुलजिम के खाते में पर्याप्त धन राशि नहीं होने के कारण 'Wrongly Delivered/Not Drawn on us' के नोट के साथ उक्त चैक अनादृत कर लौटा दिया। परिवादी ने उसके अधिवक्ता के जरिए दिनांक 19-11-2024 को मुलजिम को जरिए रजिस्टर्ड डाक नोटिस/सूचना उसके पते पर भिजवायी। उक्त रजिस्टर्ड नोटिस मुलजिम को प्राप्त हो गया। नोटिस प्राप्ति के पश्चात् भी न तो मुलजिम ने उक्त नोटिस का कोई जवाब ही दिया और न ही चेक राशि उसको अदा की। मुलजिम को नोटिस में दी गई समय अवधि समाप्त हो गई। इस कारण परिवाद पेश करने का कारण पैदा हुआ। अतः निवेदन है कि मुलजिम के विरुद्ध कार्यवाही की जाकर उसके जुर्म की सख्त सजा भुगतायी जाए व फरियादी की राशि मय हर्जाना मुलजिम से दिलाया जावे, इत्यादि।
3. परिवादी की ओर से अपने परिवाद पत्र के समर्थन में परिवादी गोपालसिंह का शपथ पत्र तथा दस्तावेजात असल चैक, रिटर्न मेमो, रजिस्टर्ड नोटिस, डाकघर रसीद, डाकघर एडी रसीद, ट्रेक कंसाइनमेंट व इस्तगासा आदि प्रस्तुत किये गए हैं।
4. बहस प्रसंज्ञान सुनी गई। अभियुक्त के विरुद्ध प्रथम दृष्ट्या मामला बनना पाये जाने पर अभियुक्त के विरुद्ध धारा 138 परक्राम्य लिखत अधिनियम के अपराध में प्रसंज्ञान लिया जाकर प्रकरण दर्ज रजिस्टर किया गया तथा अभियुक्त को जरिए सम्मन तलब किया गया।
5. हस्तगत प्रकरण में अभियुक्त के उपस्थित आने पर अभियुक्त को धारा 138 परक्राम्य लिखत अधिनियम का आरोप सारांश मौखिक रूप से सुनाया व समझाया गया, तो अभियुक्त ने आरोप से इन्कार कर अन्वीक्षा चाही।

6. परिवादी की ओर से साक्ष्य परिवादी में एडव्ल्यू. 01 गोपालसिंह का मुख्य परीक्षा का शपथ-पत्र पेश कर साक्ष्य लेखबद्ध करवाई गई तथा दस्तावेजी साक्ष्य में प्रदर्श पी. 01 असल चैक, प्रदर्श पी. 02 रिटर्न मेमो, प्रदर्श पी. 03 रजिस्टर्ड नोटिस, प्रदर्श पी. 04 डाकघर रसीद, प्रदर्श पी. 05 डाकघर एडी रसीद, प्रदर्श पी. 06 ट्रेक कंसाइनमेंट, प्रदर्श पी. 07 इस्तगासा पेश कर प्रदर्शित करवाए गए।

7. साक्ष्य परिवादी समाप्त होने पर अभियुक्त के बयान तहत धारा 313 दं.प्र.सं. लेखबद्ध किए गए, तो अभियुक्त ने परिवादी की साक्ष्य को गलत होना बताया तथा साक्ष्य सफाई पेश करना नहीं जाहिर किया जिस पर साक्ष्य सफाई बन्द की गई।

8. बहस उभय पक्ष सुनी गई। पत्रावली का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया गया।

9. प्रकरण के अवधारण के लिये मुख्य रूप से अवधारित बिन्दु यह है कि:-

(1). आया अभियुक्त ने परिवादी से घरेलू व व्यवसायिक आवश्यकता हेतु रूपयों की अदायगी हेतु एक चेक संख्या 875042 तादादी 6,50,000/- रूपए दिनांक 09-08-2024 का परिवादी को दिया तथा उक्त चेक अभियुक्त को बैंक द्वारा रिटर्न मेमो में 'Wrongly Delivered/Not Drawn on us' नोट के कारण संबंधित बैंक के द्वारा अनादरित किया गया एवं परिवादी की ओर से अभियुक्त को चेक में वर्णित राशि की अदायगी हेतु नोटिस दिये जाने के पश्चात भी अभियुक्त द्वारा चेक राशि का भुगतान नहीं कर परक्राम्य लिखत अधिनियम की धारा 138 के तहत दण्डनीय अपराध कारित किया गया?

(2). यदि हाँ तो अभियुक्त को क्या सजा तजवीज की जाए?

10. उक्त विचारणीय बिन्दु के संबंध में अधिवक्ता परिवादी का दौरान बहस यह तर्क रहा है कि परिवादी की ओर से प्रस्तुत प्रलेखीय व मौखिक साक्ष्य के आधार पर अभियुक्त पर आरोपित अपराध सन्देह से परे प्रमाणित है। अभियुक्त द्वारा परिवादी से घरेलू व व्यवसायिक कार्यों में रूपयों की आवश्यकता हेतु रूपए उधार लिए थे जिसके भुगतान की राशि चुकाने हेतु अपने हस्ताक्षर कर विवादित चेक प्रदान किया गया था, जो कि अनादरित हुआ है, जिसपर परिवादी द्वारा अभियुक्त को जरिए अधिवक्ता चेक राशि का भुगतान करने हेतु नोटिस दिया गया, परन्तु नोटिस प्राप्त हो जाने तथा नोटिस की अवधि समाप्त होने तक भी चेक की राशि की अदायगी नहीं की गई। अतः अभियुक्त को आरोपित अपराध में दोषसिद्ध कर विधि अनुसार दण्डित किया जाए।

11. विद्वान अधिवक्ता अभियुक्त द्वारा उक्त तर्कों का विरोध करते हुए निवेदन किया गया कि अभियुक्त परिवादी से घरेलू व व्यवसायिक कार्यों में रूपयों की आवश्यकता के लिए कोई राशि उधार नहीं ली। उसने चैक सिक्क्योरिटी के पेटे परिवादी को दिया था, जिसका परिवादी ने दुरुपयोग कर न्यायालय में झूठा पेश किया है। अतः अभियुक्त को दोषमुक्त किया जाए। अधिवक्ता अभियुक्त द्वारा स्वयं के तर्कों के समर्थन में निम्न न्यायिक दृष्टांत प्रस्तुत किए गए, जिनका ससम्मान अवलोकन किया गया।

(1). विजय बनाम लक्ष्मण, 2013(2) जे.एल.जे. 1 सु.को. 2013(2), म.प्र.लॉ.ज. 615:2013(4) एम.पी.एच.टी. 171:2013(2) म.प्र.

(2). मुजीव हुसैन बनाम स्माईल, 2019 (2) म.प्र.लॉ.ज. 285 म.प्र.)

- (3). मेसर्स भारत सेल्स कार्पोरेशन बनाम स्टेट ऑफ झारखंड, 2004 क्रि.लॉ.ज. 4569 (आदर्श स्टेशनरी बनाम श्री महावीर एजेन्सी 2018 (1) अपराध निर्णय जर्नल 156:2018 (1) मनिसा 90
- (4). नुटेक ओर्गेनिक केमिकल लिमिटेड बनाम जी.एम.आर. टेक्नोलोजी एण्ड इंडस्ट्रीज लिमिटेड 2003 (3) बी.सी. 435 आन्ध्र प्रदेश
- (5). गुरुशेखरन बनाम अरूणाचलम, 2018(2) बी.सी. 145 मद्रास
- (6). शेख जलाल बनाम स्टेट ऑफ गोवा, 2018(1) बी.सी. 7 सी.एन. बम्बई
- (7). एस.एन. डगोलकर बनाम डयूरोप्लस इंडिया प्राईवेट लिमिटेड 2007 (2) क्राइम्स 469 कलकत्ता
- (8). शोभा चौहान बनाम गोपीचन्द्र खत्री, 2017(1) म.प्र.लॉ.ज. (क्रिमिनल) 96
- (9). राजाराम पुत्र श्रीरामुल्लु नायडू बनाम मरूथाचलम 2023 सी.आर.एल.आर (एससी) 1 क्रिमिनल अपील नं. 1978 ऑफ 2013
- (10). श्रीदत्तात्रेय बनाम श्रनप्पा 2024 सी.आर.एल.आर (एससी) 944 क्रिमिनल अपील नं. 3257 ऑफ 2024
12. अधिवक्ता अभियुक्त की बहस के विरोध में परिवादी की ओर से पुनः निवेदन किया गया कि प्रश्नगत चेक अभियुक्त द्वारा ही परिवादी को दिया गया था।
13. उभय पक्षों के तर्कों पर मनन किया गया तथा बहस के प्रकाश में संबंधित विधि एवं पत्रावली का अवलोकन किया गया।
14. प्रकरण के अवधारण के लिये मुख्य अवधारित बिन्दु ये हैं कि:-
 - (1) क्या अभियुक्त द्वारा परिवादी को किसी विधिक दायित्व के उन्मोचन पेटे प्रदर्श. 01 चेक संख्या 875042, दिनांकित 09-08-2024 तादादी 6,50,000/- रूपए दिया गया था?
 - (2) क्या अभियुक्त का उक्त चेक परिवादी द्वारा विहित समयावधि में बैंक में प्रस्तुत करने पर बैंक द्वारा उक्त चेक अभियुक्त को रिटर्न मेमो में 'Wrongly Delivered/Not Drawn on us' नोट के कारण के कारण अनादरित कर परिवादी को लौटा दिया गया। जिसपर परिवादी द्वारा अभियुक्त को विहित समयावधि में चेक अनादरण की सूचना दिए जाने के उपरांत भी अभियुक्त द्वारा विहित समयावधि में परिवादी को चेक में वर्णित राशि का भुगतान नहीं किया गया, जोकि धारा 138 परक्राम्य लिखत अधिनियम के तहत दण्डनीय अपराध है?

विचारणीय बिन्दु संख्या:-1

15. उक्त विचारणीय बिन्दु के संबंध में न्यायालय द्वारा यह तय किया जाना है कि "क्या अभियुक्त द्वारा परिवादी को प्रश्नगत चेक किसी विधिक दायित्व या उधार के उन्मोचन पेटे दिया गया था?" इस संबंध में परिवादी द्वारा अपने साक्ष्य के शपथ-पत्र में अंकित किया गया है कि अभियुक्त ने परिवादी से घरेलू व व्यवसायिक कार्यों में रूपयों की आवश्यकता हेतु दी गई की राशि के भुगतान की अदायगी हेतु दिनांक 09-08-2024 को एक चेक अभियुक्त ने उसकी खाते की बैंक, भारतीय स्टेट बैंक, शाखा असनावर का संख्या 875042 राशि 6,50,000/- रूपए का अपने हस्ताक्षरयुक्त परिवादी को जारी किया था। जिरह में परिवादी ने अभिकथित किया कि वह सिंचाई विभाग में ठेकेदारी का काम करता है। उसकी आय का जरिया एकमात्र ठेकेदारी ही है। उसकी

खेतीबाड़ी से भी आय होती है। लाईसेंस उसके बड़े भाई के नाम होने के कारण वह उनसे ठेके लेता है। उसके नाम गांव में 3-4 बीघा जमीन है। वह ठेकेदारी से एक साल में करीब 15-20 लाख रूपए की आय अर्जित करता है और खेती से 2-3 लाख रूपए सालाना अर्जित करता है। वह आईटीआर भरता है जो प्रतिवर्ष फाईल करता है। वह मुल्जिम को लाईनमैन की असनावर में नौकरी करने के कारण पिछले 5 सालों से जानता है। उसने मुल्जिम को मई 2024 में रूपए उधार दिए थे। किस तारीख को दिए थे उसे याद नहीं है। उसने अपने मुख्य परीक्षण के शपथ पत्र, परिवाद में कहीं भी अभियुक्त को राशि किस दिन उधार दी थी उसका अंकन नहीं किया है। उसने इनकम टैक्स के ब्यूरो में अभियुक्त को दी जाने वाली राशि नहीं दर्शाई। उसे इस बात की जानकारी नहीं है कि किसी भी व्यक्ति को 20,000 रूपए से अधिक नकद में राशि देना इनकम टैक्स नियमों के अंतर्गत अपराध है। उसने अभियुक्त को 6,50,000 रूपए देने बाबत कोई भी लिखा पढ़ी नहीं करवाई। उसने किसके सामने रूपए दिए थे, वह यह नहीं बता सकता। उसने रूपए घर पर ही दिए थे। उसका अभियुक्त के घर पर आना जाना नहीं था। अभियुक्त ने उसे जिस समय चैक दिया था, उसे पहले से भर रखा था। उसे इस बात की जानकारी नहीं है कि अभियुक्त का चैक किस कारण से अनादरत हुआ। पूरी पत्रावली के अंदर चैक अपर्याप्त राशि के कारण अनादरत हुआ है, अंकित नहीं है। बैंक ने उसे जो रिटर्न मेमो दिया था वो 36 नंबर के कॉलम में Wrongly Delivered/Not Drawn on us है। उसे इस बात की जानकारी लग गई है कि अभियुक्त का चैक अपर्याप्त राशि के कारण अनादरत नहीं हुआ है। इसके बाद उसने चैक को दोबारा किसी बैंक में नहीं लगाया था। नोटिस प्रदर्श पी. 03 पर उसके हस्ताक्षर नहीं हैं। प्रदर्श पी. 02 पर अभियुक्त एवं अभियुक्त का बैंक खाता संख्या अंकित नहीं है। प्रदर्श पी. 01 मूल चैक के मुख्य भाग पर किसी भी भाग पर कोई सील अंकित नहीं है। परिवादी की ओर से प्रस्तुत दस्तावेजी साक्ष्य प्रदर्श पी. 01 असल चैक, प्रदर्श पी. 02 रिटर्न मेमो, प्रदर्श पी. 03 रजिस्टर्ड नोटिस, प्रदर्श पी. 04 डाकघर रसीद, प्रदर्श पी. 05 डाकघर एडी रसीद, प्रदर्श पी. 06 ट्रेक कंसाइनमेंट, प्रदर्श पी. 07 इस्तगासा पेश किए गए हैं।

16. अभियुक्त की ओर से अपनी साक्ष्य सफाई में स्पष्ट तौर पर कथन किया गया है कि उसने गोपाल से कोई राशि उधार नहीं ली। वह गोपाल को नहीं जानता। उससे रामकुमार पुलिस वाला जो असनावर पुलिस में है, ने थाने में बुलाकर उक्त चैक लिया था जिसका रामकुमार ने धोखे से मिसयूज किया है। उक्त चैक उसके खाते में बाउंस भी नहीं हुआ।

17. जहाँ अधिवक्ता अभियुक्त की ओर से बहस के दौरान यह तर्क दिया गया है कि परिवादी की आर्थिक स्थिति अभियुक्त को राशि उधार देने की नहीं है एवं परिवादी के द्वारा दी गई उधार की राशि को भी इनकम टैक्स में नहीं दर्शाया गया है जबकि 20,000/-रूपए से अधिक में राशि देना इनकम टैक्स के नियमों के अंतर्गत अपराध है। इस विषय में परिवादी की ओर से मौखिक साक्ष्य में वह स्वयं बतौर पी.डब्ल्यू. 01 के रूप में परीक्षित हुआ है, जिसमें उसके द्वारा अभिकथित किया गया है कि उसने अभियुक्त को 6,50,000 रूपए देने बाबत कोई भी लिखा पढ़ी नहीं करवाई। उसने किसके सामने रूपए दिए थे, वह यह नहीं बता सकता। उसने रूपए घर पर ही दिए थे। उसे इस बात की जानकारी नहीं है कि अभियुक्त का चैक किस कारण से अनादरत हुआ। उसने इनकम टैक्स के ब्यूरो में अभियुक्त को दी जाने वाली राशि नहीं दर्शाई। उसे इस बात की जानकारी नहीं है कि किसी भी व्यक्ति को 20,000 रूपए से अधिक नकद में राशि देना इनकम टैक्स नियमों के अंतर्गत अपराध है। उसने अभियुक्त को 6,50,000 रूपए देने बाबत कोई भी

लिखा पढ़ी नहीं करवाई। उसने किसके सामने रूपए दिए थे, वह यह नहीं बता सकता। उसने रूपए घर पर ही दिए थे।

18. परिवादी अपने बयानों में अभियुक्त को रूपए उधार देना घर पर बताता है, जहाँ उसके द्वारा अभियुक्त को उधार केश में दिया गया था। उक्त दिए गए उधार रूपए की कोई लिखा-पढ़ी भी परिवादी के द्वारा नहीं की गई। यहाँ यह भी गौरतलब है कि परिवादी के द्वारा किसी भी चक्षुदर्शी साक्षी को संबंधित लेन-देन के विषय में परीक्षित नहीं करवाया गया है। परिवादी अपने स्वयं के बयानों में कथन किया गया है कि वह इनकम टैक्स रिटर्न भरता है। परिवादी अभियुक्त को उधार नगद में देना कहता है, परन्तु उसके द्वारा अभियुक्त जितेन्द्र कुमार को दी गई उधार राशि को इनकम टैक्स में नहीं दर्शाया गया है। इस विषय में परिवादी द्वारा वर्णित उसकी स्वयं की आय का रिटर्न व उसकी आय का कोई दस्तावेज पेश नहीं किया गया है, जो उसकी साक्ष्य पर शंका उत्पन्न करता है। क्योंकि स्वयं उक्त गवाह ने अपने बयानों में स्वीकार किया है कि वह इनकम टैक्स रिटर्न भरता है परन्तु इनकम टैक्स में उसने जितेन्द्र कुमार से लेनदारी का कोई विवरण नहीं दिया, जिससे कि यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि परिवादी का अभियुक्त से लेन-देन का कोई व्यवसाय हो।

19. प्रस्तुत साक्ष्य के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि परिवादी द्वारा अपनी वित्तीय हैसियत के संबंध में कोई भी दस्तावेज प्रस्तुत नहीं किए गए हैं। परिवादी ने स्वयं अपने बयानों में अभिकथित किया है कि वह मुल्जिम को असनावर में लाइनमैन की नौकरी करने के कारण पिछले 5 सालों से जानता है। उसने मुल्जिम को मई 2024 में रूपए उधार दिए थे परन्तु ऐसा कोई तथ्य परिवादी के द्वारा पेश नहीं किया गया है, जिससे यह प्रतीत होता हो कि अभियुक्त की परिवादी से कोई दोस्ती या लेन-देन हो, साथ में कोई व्यापार करते हों। परिवादी द्वारा पत्रावली में अभियुक्त को दी गई राशि के संबंध में कोई दस्तावेज या दिए गए ऋण बाबत कोई लिखा-पढ़ी भी पेश नहीं की गई है। ऐसा कोई तथ्य भी पत्रावली पर मौजूद नहीं है, जिससे स्पष्ट होता हो कि उधार दी गई राशि वह किसी से लेकर आया हो। आयकर रिटर्न में परिवादी ने देय ऋण को नहीं दर्शाया है, परिवादी ने लेखा बही में संव्यवहार के बाबत भी कोई प्रविष्टि प्रस्तुत नहीं की है। परिवादी यह साबित करने में विफल रहा है कि उसने अभियुक्त को घरेलू व व्यवसायिक कार्यों के लिए कोई ऋण दिया हो। ऐसे में परिवादी अभियुक्त पर विधिक दायित्व होना साबित करने में सफल होता प्रतीत नहीं होता है। अतः उक्त विचारणीय बिन्दु संख्या 1 परिवादी के विरुद्ध तथा अभियुक्त के पक्ष में तय किया जाता है।

20. चूंकि विचारणीय बिन्दु संख्या 1 में परिवादी विधिक दायित्व साबित करने में असफल रहा है। अतः विचारणीय बिन्दु संख्या 02 पर विवेचन किए जाने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती है।

21. इस प्रकार सम्पूर्ण साक्ष्य के उपरोक्त विश्लेषण व विवचेनानुसार अभियुक्त धारा 138 में दोषमुक्त किए जाने योग्य है।

आदेश

22. अतः अभियुक्त जितेन्द्र कुमार पुत्र शम्भूलाल, निवासी अकतासा, थाना असनावर जिला झालावाड़ को अपराध अन्तर्गत धारा 138 परक्राम्य लिखत अधिनियम के आरोप में दोषमुक्त घोषित किया जाता है। अभियुक्त के न्यायालय में नियमित उपस्थिति बाबत प्रस्तुत पूर्व के जमानत मुचलके निरस्त किए जाते हैं।

23. अभियुक्त को यह भी आदेश दिया जाता है कि वह अपील होने की सूरत में माननीय अपीलीय न्यायालय के समक्ष उपस्थित होने हेतु धारा 437 'क' दं.प्र.सं. के तहत 10,000/- रूपए की एक जमानत व इसी कदर राशि का स्वयं का मुचलका न्यायालय के समक्ष पेश कर तस्दीक करावे, जोकि बाद कराने तस्दीक छः माह तक प्रवर्तन में रहेंगे।

(आशीष मीना)

अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट,
अकलेरा, जिला-झालावाड़ (राज.)

24. निर्णय आज दिनांक 24-03-2026 को खुले न्यायालय में मुझ अधोहस्ताक्षरकर्ता द्वारा सुनाया जाकर लिखाया गया।

(आशीष मीना)

अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट,
अकलेरा, जिला-झालावाड़ (राज.)

प्रमाण पत्र

निर्णय में किए गए सभी संशोधनों को अपलोड करने से पूर्व समाविष्ट कर लिया गया है।

(राजाराम मीना)

आशुलिपिक ग्रेड III

नोट: यह प्रतिलिपि प्रार्थी अधिवक्ता की जानकारी के लिए है। सत्यापित प्रतिलिपि न्यायालय से प्राप्त कर सकते हैं।